''मीठे बच्चे – प्राण बचाने वाला प्राणेश्वर बाप आया है, तुम बच्चों को ज्ञान की मीठी मुरली सुनाकर प्राण बचाने''

प्रश्न:- कौन सा निश्चय तकदीरवान बच्चों को ही होता है?

उत्तर:- हमारी श्रेष्ठ तकदीर बनाने स्वयं बाप आये हैं। बाप से हमें भक्ति का फल मिल रहा है। माया ने जो पंख काट दिये हैं – वह पंख देने, अपने साथ वापिस ले जाने के लिए बाप आये हैं। यह निश्चय तकदीरवान बच्चों को ही होता है।

गीत:- यह कौन आज आया सवेरे.....

ओम् शान्ति। सवेरे-सवेरे यह कौन आकर मुरली बजाते हैं। दुनिया तो बिल्कुल ही घोर अन्धियारे में है। तुम अभी मुरली सुन रहे हो – ज्ञान सागर, पतित-पावन प्राणेश्वर बाप से। वह है प्राण बचाने वाला ईश्वर। कहते हैं ना हे ईश्वर इस दु:ख से बचाओ। वह हद की मदद मांगते हैं। अभी तुम बच्चों को मिलती है – बेहद की मदद क्योंकि बेहद का बाप है ना। तुम जानते हो आत्मा गुप्त है, बाप भी गुप्त है। जब बच्चे का शरीर प्रत्यक्ष है तो बाप भी प्रत्यक्ष है। आत्मा गुप्त है तो बाप भी गुप्त है। तुम जानते हो बाप आया हुआ है, हमको बेहद का वर्सा देने। उनकी है श्रीमत। सर्व शास्त्रमई शिरोमणी गीता मशहूर है सिर्फ उनमें नाम बदली कर दिया है। अब तुम जानते हो श्रीमत भगवानुवाच है ना। यह भी समझ गये – भ्रष्टाचारी को श्रेष्ठाचारी बनाने वाला एक ही बाप है। वही नर से नारायण बनाते हैं। कथा भी सत्य-नारायण की है। गाया जाता है अमर कथा, अमरपुरी का मालिक बनने अथवा नर से नारायण बनने की है। बात एक ही है। यह है मृत्युलोक। भारत ही अमरपुरी था – यह किसको पता नहीं है। यहाँ भी अमर बाबा ने भारतवासियों को सुनाया है। एक पार्वती वा एक द्रोपदी नहीं है। यह तो बहुत बच्चे सुन रहे हैं। शिवबाबा सुनाते हैं ब्रह्मा द्वारा। बाप कहते हैं मैं ब्रह्मा द्वारा मीठे-मीठे रूहों को समझाता हूँ। बाप ने समझाया है बच्चों को आत्म-अभिमानी जरूर बनना है। बाप ही बना सकते हैं। दुनिया में एक भी मनुष्य मात्र नहीं जिसको आत्मा का ज्ञान हो। आत्मा का ही ज्ञान नहीं है तो परमपिता परमात्मा का ज्ञान कैसे हो सकता है। कह देते आत्मा सो परमात्मा। कितनी भारी भूल में सारी दुनिया फँसी हुई है। इस समय मनुष्यों की बुद्धि कोई काम की नहीं है। अपने ही विनाश के लिए तैयारी कर रहे हैं। तुम बच्चों के लिए यह कोई नई बात नहीं है। जानते हो ड्रामा अनुसार उन्हों का भी पार्ट है। ड्रामा के बन्धन में बांधे हुए हैं। आजकल दुनिया में हंगामा बहुत है। अभी तुम बच्चे हो विनाश काले प्रीत बुद्धि, जो बाप से विप्रीत बुद्धि हैं, उनके लिए विनशन्ती गाया हुआ है। अभी इस दुनिया को बदलना है। यह भी जानते हो बरोबर महाभारत लड़ाई लगी थी, बाप ने राजयोग सिखाया था। शास्त्रों में तो टोटल विनाश लिख दिया है। परन्तु टोटल विनाश तो होना नहीं है फिर तो प्रलय हो जाए। मनुष्य कोई भी न रहें सिर्फ 5 तत्व रह जाएं। ऐसे तो हो नहीं सकता। प्रलय हो जाए तो फिर मनुष्य कहाँ से आये। दिखाते हैं कृष्ण अंगूठा चूसता हुआ पीपल के पत्ते पर सागर में आया। बालक

हुआ। यह तो काम चिता पर चढ़ने से मनुष्य काला होता है। राम को भी काला दिखाते हैं, उनको भला किसने डसा! कुछ भी समझते नहीं। फिर भी जिनकी तकदीर में है, निश्चय है तो जरूर बाप से वर्सा लेंगे। निश्चय नहीं होगा तो कभी भी नहीं समझेंगे। तकदीर में नहीं है तो तदवीर भी क्या करेंगे। तकदीर में नहीं है तो फिर वह बैठते ही ऐसे हैं जैसे कुछ भी नहीं समझते हैं। इतना भी निश्चय नहीं कि बाप आये हैं बेहद का वर्सा देने। जैसे कोई नया आदमी मेडिकल कॉलेज में जाकर बैठे तो क्या समझेंगे, कुछ भी नही। यहाँ भी ऐसे आकर बैठते हैं। इस अविनाशी ज्ञान का विनाश नहीं होता है। वह फिर क्या आकर करेंगे। राजधानी स्थापन होती है तो नौकर चाकर प्रजा, प्रजा के भी नौकर चाकर सब चाहिए ना। आगे चल कुछ पढ़ने की कोशिश करेंगे परन्तु है मुश्किल क्योंकि उस समय बहुत हंगामा होगा। दिन प्रतिदिन तूफान बढ़ते जाते हैं। इतने सेन्टर्स हैं, कई आकर अच्छी रीति समझेंगे भी। यह भी लिखा हुआ है – ब्रह्मा द्वारा स्थापना। विनाश भी सामने खड़ा है। विनाश तो होना ही है। कहते हैं जन्म कम हो। परन्तु झाड़ की वृद्धि तो होनी ही है। जब तक बाप है, तब तक सब धर्म की आत्माओं को यहाँ आना ही है। जब जाने का समय होगा तब आत्माओं का आना बन्द होगा। अभी तो सबको आना ही है, परन्तु यह बातें कोई समझते नहीं। कहते भी हैं भक्तों का रक्षक भगवान। तो जरूर भक्तों पर आपदा आती है। रावण राज्य में बिल्कुल ही सब पाप आत्मा बन पड़े हैं। रावण राज्य है कलियुग अन्त में, रामराज्य है सतयुग आदि में। इस समय सब आसुरी रावण सम्प्रदाय हैं ना। कहते हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ, तो इसका मतलब यह नर्क है ना। स्वर्गवासी हुआ तो अच्छा नाम है। यहाँ तब क्या था, जरूर नर्कवासी था। यह भी समझते नहीं कि हम नर्कवासी हैं। अब तुम समझते हो बाप ही आकर स्वर्गवासी बनायेंगे। गाया भी जाता है हेविनली गॉड फादर। वही आकर हेविन स्थापन करेंगे। सभी गाते रहते हैं पतित-पावन सीताराम। हम पतित हैं, पावन बनाने वाले आप हो। वह सब हैं भक्ति मार्ग की सीतायें। बाप है राम। किसको सीधा कहो तो मानते नहीं। राम को बुलाते हैं। अभी तुम बच्चों को बाप ने तीसरा नेत्र दिया है। तुम जैसे कि अलग दुनिया के हो गये हो।

बाप समझाते हैं अभी सबको तमोप्रधान भी जरूर बनना है तब तो बाप आकर सतोप्रधान बनाये। बाप कितना अच्छी रीति बैठ समझाते हैं। कहते हैं भल तुम बच्चे सर्विस भी अपनी करते हो सिर्फ एक बात याद रखो – बाप को याद करो। सतोप्रधान बनने का और कोई रास्ता बता न सके। सर्व का रूहानी सर्जन एक ही है। वही आकर आत्माओं को इन्जेक्शन लगाते हैं क्योंकि आत्मा ही तमोप्रधान बनी है। बाप को अविनाशी सर्जन कहा जाता है। आत्मा अविनाशी है, परमात्मा बाप भी अविनाशी है। अभी आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बनी है, उनको इन्जेक्शन चाहिए। बाप कहते हैं बच्चे अपने को आत्मा निश्चय करो और अपने बाप को याद करो। बुद्धियोग ऊपर में लगाओ तो स्वीट होम में चले जायेंगे। तुम्हारी बुद्धि में है अभी हमें अपने स्वीट साइलेन्स होम में जाना है। अच्छा –

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

हुआ। यह तो काम चिता पर चढ़ने से मनुष्य काला होता है। राम को भी काला दिखाते हैं, उनको भला किसने डसा! कुछ भी समझते नहीं। फिर भी जिनकी तकदीर में है, निश्चय है तो जरूर बाप से वर्सा लेंगे। निश्चय नहीं होगा तो कभी भी नहीं समझेंगे। तकदीर में नहीं है तो तदवीर भी क्या करेंगे। तकदीर में नहीं है तो फिर वह बैठते ही ऐसे हैं जैसे कुछ भी नहीं समझते हैं। इतना भी निश्चय नहीं कि बाप आये हैं बेहद का वर्सा देने। जैसे कोई नया आदमी मेडिकल कॉलेज में जाकर बैठे तो क्या समझेंगे, कुछ भी नही। यहाँ भी ऐसे आकर बैठते हैं। इस अविनाशी ज्ञान का विनाश नहीं होता है। वह फिर क्या आकर करेंगे। राजधानी स्थापन होती है तो नौकर चाकर प्रजा, प्रजा के भी नौकर चाकर सब चाहिए ना। आगे चल कुछ पढ़ने की कोशिश करेंगे परन्तु है मुश्किल क्योंकि उस समय बहुत हंगामा होगा। दिन प्रतिदिन तूफान बढ़ते जाते हैं। इतने सेन्टर्स हैं, कई आकर अच्छी रीति समझेंगे भी। यह भी लिखा हुआ है – ब्रह्मा द्वारा स्थापना। विनाश भी सामने खड़ा है। विनाश तो होना ही है। कहते हैं जन्म कम हो। परन्तु झाड़ की वृद्धि तो होनी ही है। जब तक बाप है, तब तक सब धर्म की आत्माओं को यहाँ आना ही है। जब जाने का समय होगा तब आत्माओं का आना बन्द होगा। अभी तो सबको आना ही है, परन्तु यह बातें कोई समझते नहीं। कहते भी हैं भक्तों का रक्षक भगवान। तो जरूर भक्तों पर आपदा आती है। रावण राज्य में बिल्कुल ही सब पाप आत्मा बन पड़े हैं। रावण राज्य है कलियुग अन्त में, रामराज्य है सतयुग आदि में। इस समय सब आसुरी रावण सम्प्रदाय हैं ना। कहते हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ, तो इसका मतलब यह नर्क है ना। स्वर्गवासी हुआ तो अच्छा नाम है। यहाँ तब क्या था, जरूर नर्कवासी था। यह भी समझते नहीं कि हम नर्कवासी हैं। अब तुम समझते हो बाप ही आकर स्वर्गवासी बनायेंगे। गाया भी जाता है हेविनली गॉड फादर। वही आकर हेविन स्थापन करेंगे। सभी गाते रहते हैं पतित-पावन सीताराम। हम पतित हैं, पावन बनाने वाले आप हो। वह सब हैं भक्ति मार्ग की सीतायें। बाप है राम। किसको सीधा कहो तो मानते नहीं। राम को बुलाते हैं। अभी तुम बच्चों को बाप ने तीसरा नेत्र दिया है। तुम जैसे कि अलग दुनिया के हो गये हो।

बाप समझाते हैं अभी सबको तमोप्रधान भी जरूर बनना है तब तो बाप आकर सतोप्रधान बनाये। बाप कितना अच्छी रीति बैठ समझाते हैं। कहते हैं भल तुम बच्चे सर्विस भी अपनी करते हो सिर्फ एक बात याद रखो – बाप को याद करो। सतोप्रधान बनने का और कोई रास्ता बता न सके। सर्व का रूहानी सर्जन एक ही है। वही आकर आत्माओं को इन्जेक्शन लगाते हैं क्योंकि आत्मा ही तमोप्रधान बनी है। बाप को अविनाशी सर्जन कहा जाता है। आत्मा अविनाशी है, परमात्मा बाप भी अविनाशी है। अभी आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बनी है, उनको इन्जेक्शन चाहिए। बाप कहते हैं बच्चे अपने को आत्मा निश्चय करो और अपने बाप को याद करो। बुद्धियोग ऊपर में लगाओ तो स्वीट होम में चले जायेंगे। तुम्हारी बुद्धि में है अभी हमें अपने स्वीट साइलेन्स होम में जाना है। अच्छा –

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- ज्ञान और योग से बुद्धि को पारस बनाना है। कितना भी बीमार हो, तकलीफ हो, उसमें भी एक बाप की याद रहे।

२- अपनी ऊंची तकदीर बनाने के लिए पूरा-पूरा निश्चयबुद्धि बनना है। बुद्धियोग अपने स्वीट साइलेन्स होम में लगाना है।

वरदान:- अलौकिक खेल और खिलौनों से खेलते हुए सदा शक्तिशाली बनने वाले अचल-अडोल भव

अलौकिक जीवन में माया के विघ्न आना भी अलौकिक खेल है, जैसे शारीरिक शक्ति के लिए खेल कराया जाता है, ऐसे अलौकिक युग में परिस्थितियों को खिलौना समझकर यह अलौकिक खेल खेलो। इनसे डरो वा घबराओ नहीं। सर्व संकल्पों सहित स्वयं को बापदादा पर बलिहार कर दो तो माया कभी वार नहीं कर सकती। रोज़ अमृतवेले साक्षी बन स्वयं का सर्व शक्तियों से श्रंगार करो तो अचल-अडोल रहेंगे।

स्लोगन:-

कोई भी संसार समाचार सुनना, सुनाना–यह भी स्वयं में किचड़ा जमा करना है।